नौनिहाल गौतम

वर्तमान हिंदी साहित्य में किसान विमर्श और मीडिया की भूमिका

संपादक

डॉ. शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी-विभाग

हुतात्मा जयवंतराव पाटील, महाविद्यालय

हिमायतनगर, नांदेड

संकल्प प्रकाशन

कानपुर (उ.प्र.)

Scanned with CamScanner

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN : 978-81-951646-4-6

प्रथम संस्करण, 2021

© संपादकाधीन

पुस्तक : वर्तमान हिंदी साहित्य में किसान विमर्श और मीडिया की भूमिका

संपादक : डॉ. शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद

प्रकाशक : **संकल्प प्रकाशन**

1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर (उ.प्र.)-208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872

Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

वितरक : **समता प्रकाशन**

159/1 वार्ड नं. 12, बजरंगनगर, **रूरा**, कानपुर-देहात

दूरभाष : 9450139012, 9936565601

Email : samataprakashanrura@gmail.com

मूल्य : ₹ 695.00

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर-21

मुद्रण : आर्यन डिजिटल, दिल्ली

Scanned with CamScanner

17.

कृषिमित् कृषस्व (कृषि करो)

डॉ. नौनिहाल गौतम

भारत प्राचीन काल से ही कृषि प्रधान देश रहा है। अधिकांश आबादी कृषि या कृषि संबंधी कार्यों से जुड़ी रही है। वर्तमान में भी ग्रामीण परिवेश का मुख्य कार्य कृषि ही है। साहित्य में कृषि संबंधी विवरण प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद से लेकर वर्तमान तक प्राप्त होते हैं। ग्रामीण जनता में एक कहावत प्रचलित है– 'उत्तम खेती, अधम चाकरी'। इसका आशय है कि कृषि करना श्रेष्ठ है, किसी की नौकरी करने की अपेक्षा। मनुष्य की तीन मूलभूत आवश्यकताएं मानी जाती हैं– रोटी, कपड़ा और मकान। इनमें भी रोटी (अन्न) प्रथम स्थान पर है क्योंकि भोजन हमारी प्रथम आवश्यकता है। कृषि को प्राचीन साहित्य में बहुत महत्त्व दिया गया है। विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में कहा गया है कि 'कृषि ही करो, उससे जितना धन प्राप्त हो उसमें आनन्द मनाओ, कृषि से ही तुम्हें गाय आदि सम्पत्ति और पत्नी भी प्राप्त होगी अर्थात् जीवन सुखी और उन्नत होगा। इसलिए जुआ मत खेलो, कृषि करो।' वह मन्त्र है–

'अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।
तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः।।'

(ऋग्वेद 10.34.13)

प्राचीन साहित्य में कृषि के उल्लेख– ऋग्वेद में कृषि संबंधी अनेक विवरण प्राप्त होते हैं। कृषि में काम आने वाले यन्त्रों के उल्लेख, कृषि कार्य करने वाले लोगों के उल्लेख, फसलों के उल्लेख और कृषि प्रक्रिया के उल्लेख वैदिक साहित्य में प्राप्त होते हैं। इससे उस काल में कृषि उन्नत अवस्था में थी, यह ज्ञात होता है। अथर्ववेद में तो कृषिसूक्त (अ. 3.17) ही है। इसमें कृषि के सोपानों का उल्लेख भी है। सर्वप्रथम हलों से भूमि को जोतना, जुती हुई भूमि में बीज वपन करना, धान्य की उत्पत्ति, सिंचन, सूर्य से फसल का पकना, पके हुए अन्न की प्राप्ति। इसमें वार्षिक कृषि का उल्लेख है। कृषि के वर्षा जल से सिंचन का भी उल्लेख है। कृषि कार्य में बैलों, कृषि करने वालों के आनन्दित रहने की बात कही गयी है। कृषिकार्य को आनन्दपूर्ण कहा गया है। इससे ज्ञात होता है कि कृषिकार्य प्राचीन समय में लोगों का रुचिकर कार्य रहा है। रामायण काल में भी आजीविका का प्रमुख साधन कृषि ही रहा है। अधिकतर कृषि वर्षा

Scanned with CamScanner